विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग -अष्टम

विषय -हिंदी (व्याकरण)

।। वर्ण-विचार ।।

इस पाठ के कुछ पन्ने पढ़ने के लिए तथा कुछ पन्ने अभ्यास-कार्य के लिए दिए जा रहे हैं ,जिसे आप पढ़ें तथा पूर्व में पठित पाठांश के आधार पर अभ्यास कार्य को पूरा करें –

ऑ (ॉ) अंग्रेजी से आई स्वर ध्वनि है। हॉल, डॉक्टर, कॉलेज आदि शब्दों में यह ध्वनि मिलती है। इसी प्रकार 'ज़' और 'फ़' भी अरबी–फारसी और अंग्रेजी के शब्दों में मिलते हैं। जैसे– ज़ाहिर, फ़ौरन, ज़रूर, फ़िक्र, जज़्बात आदि। इन्हें **आगत ध्वनियाँ** भी कहा जाता है।

व्यंजन से व्यंजन का संयोग

स्वर सहित व्यंजन से स्वर रहित व्यंजन के मेल को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

व्यंजनों को साथ मिलाने के कुछ नियम हैं–

क. **खड़ी पाई हटाकर** – खड़ी पाईवाले व्यंजन जब किसी दूसरे व्यंजन के साथ मिलते हैं तो इनकी पाई हटा दी जाती है। ऐसे 22 व्यंजन हैं, ग, म, त, स आदि। जैसे–

ग् + य = ग्य (ग्यारह) स् + त = स्त (स्तुति)

म् + ल = म्ल (अम्ल) त् + म = त्म (आत्मा)

ख. **घुंडी हटाकर** – क और फ/फ़ जब अन्य व्यंजनों के साथ मिलते हैं तब इनकी घुंडी हटा दी जाती है। जैसे–

क् + त = क्त (रक्त) फ + त = फ्त (रफ्तार)

ग. **बिना पाईवाले व्यंजन** जैसे ट, ठ, ड, ढ, ह, द जब किसी व्यंजन के साथ मिलते हैं तब इनहें अ–रहित बनाने के लिए इनके नीचे हलंत (्) लगाया जाता है। जैसे–

ट् + ट = ट्ट (खट्टा) द् + व = द्व (द्वंद्व)

द् + ध = द्ध (शुद्ध) द् + भ = द्भ (अद्भुत)

ह् + व = ह्व (विह्वल) ह् + न = ह्न (चिह्न)

घ. **'र' के संयोग से बनानेवाले व्यंजन-गुच्छों के नियम इस प्रकार हैं–**

'र' के बाद कोई व्यंजन आए तो 'र्' अपने बाद आनेवाले वर्ण के ऊपर में लगता है। जैसे–

र् + म = र्म (धर्म) र् + ष = र्ष (वर्ष)

'र' से पूर्व कोई भी स्वर रहित व्यंजन हो तो 'र' उस व्यंजन वर्ण रेफ के रूप मे लगता है। जैसे–

क् + र = क्र (क्रमिक) प् + र = प्र (प्रवीण)

'ट' और 'ड्' के बाद 'र' आने से उसका रूप इस प्रकार हो जाता है। जैसे–

'ट्' + र = ट्र (ट्रेन) ड् + र = ड्र (ड्रम)

वर्ण–विच्छेद

वर्ण-विच्छेद : शब्दों का वर्ण–विच्छेद करते समय व्यंजनों को अ–रहित रूप में और स्वर को अलग लिखा जाता है।

जैसे– काम = क् + आ + म् + अ सेब = स् + ए + ब् + अ

वर्ण–विच्छेद के सही ज्ञान से शब्दकोश में शब्द ढूँढ़ने और शुद्ध लिखने में आसानी होती है।

- उच्चरित ध्वनियों के लिखित चिह्नों को वर्ण कहते हैं।
- एक निश्चित वर्णक्रम को वर्णमाला कहते हैं।
- स्वरों के उच्चारण में वायु बिना किसी रुकावट के मुख से निकलती है।
- स्वर तीन प्रकार के होते हैं– ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत।
- व्यंजनो के उच्चारण में वायु मुख में किसी स्थान को स्पर्श करती हुई निकलती है।
- जब स्वरों को व्यंजनों के साथ लिखा जाता है तब स्वरों की मात्राओं का प्रयोग होता है। दो स्वरों को एक साथ लिखते हुए उनकी मात्रा का प्रयोग नहीं होता।
- ङ और ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।
- अनुस्वार व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के पाँचवें वर्ण का प्रतिनिधित्व करता है।
- अनुस्वार वस्तुतः नासिक्य व्यंजन होता है।
- व्यंजनों को दूसरे व्यंजनों से मिलाने के कुछ निश्चित नियम हैं।
- वर्ण–विच्छेद में प्रत्येक व्यंजन से स्वर को अलग किया जाता है।

आओ अभ्यास करें

1. वर्ण–विच्छेद में क्या किया जाता है?

.....

2. स्वर कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम लिखें–

.....

.....

3. रिक्त स्थान भरें–

क. हिंदी में क्ष, त्र, ज्ञ, श्र को .....संयुक्त व्यंजन..... कहा जाता है।

ख. ड़, ढ़ ..... व्यंजन ध्वनियाँ हैं।

ग. आँ, ऊँ एँ को ..... स्वर कहा जाता है।

घ. हिंदी वर्णमाला में कुल ..... स्वर हैं।

4. दिए गए व्यंजनों को उपयुक्त वर्ग में लिखें–

श, न, त, क, भ, घ, ण, म, स, ह

स्पर्श व्यंजन	ऊष्म व्यंजन	नासिक्य व्यंजन
....	....	....
....	....	....
....	....	....

5. निम्नलिखित वर्णों के साथ उपयुक्त मात्रा लगाकर अन्य शब्द बनाएँ–

मन	सर	ड्रम	धन	ज्ञान
....	....	....	....	....

6. निम्नलिखित के दो-दो उदाहरण लिखें–

क. स्पर्श व्यंजन – ....

ख. ऊष्म व्यंजन – ....

ग. उत्क्षिप्त व्यंजन – ....ड़..........ढ़..........

घ. ह्रस्व स्वर – ....

ङ. अयोगवाह – ....

7. दिए गए व्यंजनों के संयोग से बननेवाले शब्दों के तीन-तीन उदाहरण दें–

क. क् + ष = ...

ख. त् + र = ...

ग. ग् + य (ज् + ञ)= ....

घ. त् + य = ...

ङ. स् + त = ...

. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद करें–

दुर्लभ – .द्+उ.+र्.+ल्.+अ.+भ्.+अ कालिमा – ....

शांति – .... अंधकार– ....

कृषि – .... पड़ताल– ....

पूछताछ – .... क्षेत्र – ....

अच्छाई – .... सप्रेम – ....